अध्याय–2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय –2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1. भूमिका :–

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रकिया में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है, क्योंकि सतत मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधानकर्ता को इस पुनरावलोकन से मिलता है। अनुसंधायक द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर कार्य से बिना जोडे, स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसी भी क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान करना है तो अनुसंधानकर्ता के लिए उससे संबंधित साहित्य का अवलोकन एक अनिवार्य और आवश्यक कदम होता है।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन न करने से अनुसंधानकर्ता द्वारा जो अनुसंधान कार्य हाथ में लिया जाता है उससे पूरी वैज्ञानिकता या आवश्यक पूर्वज्ञान की सीमा को ज्ञात कर पाना मुश्किल हो जाता है। ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि, अनुसंधानकर्ता को ज्ञात हो कि, ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है। पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं के बारे में अनुसंधानकर्ता ज्ञात हो सकता है।

2.2. संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ :–

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से वर्तमान में जो अनुसंधानकर्ता शोधकार्य कर रहा है उसमें निम्न प्रकार के लाभ हो सकते हैं :

- जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
- ज्ञान के क्षेत्र विस्तार के लिए आवश्यक है कि, अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि, ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है क्योंकि, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
- पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतरदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
- पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का ज्ञान होता है।
- सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में शोधकर्ता को करने की आवश्यकता होती है।

2.3. संबंधित साहित्य का आकलन :-

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता द्वारा किये गये संबंधित साहित्य का आकलन दिया गया है, जो प्राथमिक स्तर की शिक्षा में हुए है :

1. काले, शीतल (2004-05) :-

'प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में जनतंत्रात्मक मूल्य का अध्ययन'

प्रस्तुत अध्ययन में अमरावती (महाराष्ट्र) शहर के 100 शिक्षकों को प्रारंभिक विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के लिए चयनित किया गया। जिस में 56 शिक्षकों एवं 44 शिक्षिकाओं को शामिल किया गया। इस शोधकार्य में 100 शिक्षकों का जनतंत्रात्मक मूल्यों के अध्ययन के लिए एस. पी. कुलश्रेष्ठ के जनतंत्रात्मक मूल्य परिसूची का प्रयोग किया गया। अंको की गणना कुंजी की सहायता से की गई। प्राप्त अंको का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन निकालकर परीक्षण किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया, जिनके आधार पर निम्न निष्कर्ष पाए गएँ :

- ❖ स्त्री और पुरूष के बीच में चरित्र मूल्यों के प्रति अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया। स्वतंत्रता, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय एकात्मता, श्रम सम्मान एवं स्वास्थ्य मूल्यों में स्त्री एवं पुरूष शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- ❖ डी.एड्. और बी.एड्. शिक्षकों के बीच (चरित्र, स्वतंत्रता, समानता, बौद्धिक, राष्ट्रीय एकता, श्रम सम्मान एवं स्वास्थ्य मूल्यों) में शिक्षकों का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- ❖ ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच में चरित्र मूल्यों के प्रति अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया।
- ❖ संयुक्त कुटुम्ब और विभक्त कुटुम्ब के शिक्षकों के बीच में मूल्यों में शिक्षकों का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2. **भाभरे, कैलाश त्रंबक (2003-04):**

'प्राथमिक शिक्षण-प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों एवं अध्ययन अभिक्षमता का अध्ययन'

इस शोधकार्य में शोधकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन के लिए न्यादर्श के रूप में मध्यप्रदेश के चार जिलों भोपाल, सीहोर, रायसेन, विदिशा के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के 128 शिक्षण-प्रशिक्षणार्थियों (77 छात्रा एवं 51 छात्र) को सोद्देश्य विधि से चयनित किया। इसमें डॉ. आर.पी. सिंह एवं एस.एन. शर्मा की व्यकितगत मूल्य प्रश्नावली तथा डॉ. जी.पी. शेरी एवं डॉ. आर.पी. वर्मा की अध्यायन अभिक्षमता परीक्षण माला का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक शिक्षण-प्रशिक्षणार्थियों में मूल्य प्राप्तांको के सांख्यकीय विश्लेषण के लिए मुख्य रूप से मध्यमान, प्रमाणित विचलन तथा कांतिक अनुपात की गणना की गई तथा छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षणार्थियों की सार्थकता की जांच की गई तथा पिअरसन सहसंबंध गुणांक से व्यक्तिगत मूल्यों एवं अध्यापन अभिक्षमता से सहसंबंध का अध्ययन किया गया।

इस शोधकार्य के निष्कर्ष में छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षणार्थियों के धार्मिक, सामाजिक, जनतांत्रिक, आर्थिक, ज्ञानात्मक, ध्येयात्मक, पारिवारिक, स्वास्थ्य मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जब कि, छात्र एवं छात्रा प्रशिक्षणार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर पाया गया।

3. **मालीवाड़, गुलाबसिंह झेड़. (2004-05) :**

'प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन'

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात राज्य के पंचमहाल जिला के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त तथा नीजी स्कूलो के 121 शिक्षक- शिक्षिकाओं का चयन किया गया। जिसमें 81 शिक्षक एवं 40 शिक्षिकाओं को शामिल किया गया। इस शोधकार्य में शोधकर्ता ने एस.पी. आहलूवालिया की शिक्षक मूल्य परिसूची का उपयोग किया। अंको की गणना कुंजी की सहायता से की। प्राप्त अंको का मध्यमान प्रमाणित विचलन निकालकर 'टी' तथा 'एफ' परीक्षण से किया।

प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया, जिनके आधार पर प्रदत्तों को विश्लेषित करके उनकी व्याख्या की गई। प्राप्त परिणाम इस तरह से है :

- ❖ लिंग के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में पुरुष शिक्षकों एवं स्त्री शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- ❖ क्षेत्र के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षक-शिक्षिकाओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- ❖ उम्र के आधार पर सामाजिक मूल्य में सार्थक अंतर पाया गया।

❖ विद्यालयों के प्रकार के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

❖ अनुभव व आय के आधार पर मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

4. **मिश्रा, रश्मि (2005-06) :**

'कक्षा सातवीं की विज्ञान पाठ्यपुस्तक का पर्यावरणीय मूल्यों के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन'

इस शोधकार्य में शोधकर्ता ने विज्ञान की पाठ्यपुस्तक मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ली। न्यादर्श का चयन शोधकर्ता द्वारा अपनी सुविधा के अनुसार सोद्देश्य विधि से किया। इसके अंतर्गत भीवाल शहर के आठ शासकीय तथा आठ अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया, जो कक्षा सातवी में विज्ञान विषय पढाते थे। शोध अध्ययन हेतु डाइट के 25 शिक्षकों का भी चयन किया गया। शोधकर्ता ने प्रस्तुत लघुशोध में निम्न उपकरणों का उपयोग किया-

- चेकलिस्ट,
- शोधकर्ता द्वारा किया गया विश्लेषणात्मक अध्ययन।

शोधकार्य के प्रस्तुतीकरण हेतु चतुर्थ अध्याय में स्वयं शोधकर्ता तथा शिक्षकों द्वारा प्रदत्तों का सारणीयन एवं विश्लेषण किया गया। इस शोधकार्य में शोधार्थी का विज्ञान विषय में पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन था। जो उपयुक्त पाया गया।

5. **यादव, सीमा (2003-04) :**

'प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन'

प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल शहर के 150 शिक्षकों का प्राथमिक विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के लिए चयनित किया गया।

जिसमें 48 शिक्षकों एवं 102 शिक्षिकाओं को शामिल किया गया। इस संशोधन में शोधकर्ता ने एस.पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक मूल्य परिसूची का उपयोग किया। अंको की गणना कुंजी की सहायता से की गई। प्राप्त अंको का मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन निकालकर 'टी' तथा 'एफ' परीक्षण किया गया।

इस शोधकार्य में परिणाम निम्नानुसार पाएं गए –

1. आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में पुरूष शिक्षकों एवं स्त्री शिक्षको में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. धर्म के आधार पर सौन्दर्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर पाया गया। सौंदर्यात्मक मूल्य हिन्दू शिक्षकों में इस्लाम शिक्षकों की अपेक्षा कम है जबकि, सैद्धांतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में हिन्दु शिक्षकों एवं इस्लाम शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. मातृभाषा के आधार पर सौंदर्यात्मक मूल्य के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया इस प्रकार में शिक्षकों के सौंदर्यात्मक मूल्य में मातृभाषा का प्रभाव देखने को मिला।
4. शैक्षणिक योग्यता के आधार पर सैद्धांतिक मूल्य के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया।
5. व्यावसायिक योग्यता के आधार पर शिक्षकों के सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
6. शिक्षकों के सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्यों में विद्यालय के प्रकार का प्रभाव देखने को नहीं मिला।
7. अनुभव के आधार पर आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया।

8. विषय के आधार पर सैद्धांतिक मूल्य के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया।

9. उम्र के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में चालीस वर्ष से कम एवं चालीस वर्ष से अधिक उम्र वाले शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

10. वैवाहिक स्तर के आधार पर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

11. पाठ्यक्रम के आधार पर सामाजिक मूल्य के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया।

6. **शर्मा, चित्रा (2003-04) :**

'छठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के मूल्य विकास पर कहानियों का प्रभाव'

शोधकर्ता ने प्रस्तुत समस्या के लिए न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया। जिसके अंतर्गत प्रायोगिक विद्यालय को लिया गया। जिस में कक्षा 6 के दो वर्गो के 67 छात्र-छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया। शोधकर्ता ने स्वनिर्मित मूल्यपरख परीक्षण का उपयोग किया जिसमें 11 कहानियों का और 50 प्रश्नों का उपयोग किया गया।

शोधकार्य के निष्कर्ष में जो विघार्थी ने सौंदर्यात्मक भावना को प्रदर्शित करती कहानियाँ शिक्षिका द्वारा सुनी उनमें सौंदर्यात्मक की भावना का विकास अधिक पाया गया। सापेक्ष उनके, जो कहानियाँ स्वयं विद्यार्थियों ने पढ़ी। जो विद्यार्थी ईमानदारी की भावना, सच्चाई की भावना को प्रदर्शित कहानियाँ सुनी इनमें, ईमानदारी की भावना को प्रदर्शित करती कहानियाँ सुनी उनमें ईमानदारी की भावना का विकास अधिक पाया गया, सापेक्ष उनके जो कहानियाँ स्वयं ने पढी उसमें सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

संबंधित साहित्य में शोधकर्ता द्वारा जब शोधपत्रों का अवलोकन किया गया तो उसमें मूल्य-शिक्षा संबंधित निम्नलिखित निष्कर्ष व परिणाम संबंधित शोधपत्रों में पाएँ गयें :

1. Choudhuri, Indranath :

'Promating value education trough children's literature'

इस संदर्भ में संशोधनकर्ता का मानना है कि, बालसाहित्य बालकों में मूल्यों के विकास में सार्थक भूमिका के रूप में रहा है। यह वह माध्यम है, जिसके सहारे दुन्यवी शब्दजाल को बालक सामान्य भाषा में समझ के व्यक्तिगत आनंद उठाते है। इस शोधपत्र में परंपरागत साहित्य, जो भारत में मूल्यों के विकास में अहम भूमिका में रहा हैं, उसके बीच की खाली जगह को भरने की भूमिका में बालसाहित्य रहा है। इस साहित्य को पढ़ने से बच्चों में नैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक जैसे मूल्यों का विकास साहित्य के आनंद के साथ साथ होता रहा है। शोधकर्ता का मानना है कि, बालसाहित्य के कारण भारतीय साहित्य; खास करके वह साहित्य जो एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरण करती है; उसमें पंचतंत्र, मूल्यों की कहानियाँ आदि साहित्यग्रन्थ के कारन बालक में पीढ़ी दर पीढ़ी मूल्यों का विकास होता रहा हैं। इस शोधपत्र में बालसाहित्य का मूल्य विकास पर असर इस संदर्भ में अभ्यास किया गया है। जिसमें सार्थकता पाई गई।

2. गुप्ता, महावीर प्रसाद :

'विज्ञान शिक्षण के माध्यम से मानवीय मूल्यों की शिक्षा'

इस शोधपत्र में विज्ञान शिक्षण के माध्यम से मानवीय मूल्यों की शिक्षा की बात की गई है। इस शोधपत्र का हार्द- सांराश ऐसा है कि, मूल्य स्थापना का सबसे उपयुक्त समय बाल्यकाल एवं विशोरावस्था है। बालक अनुकरण से सीखता है । अतः नैतिक शिक्षा देने से पूर्व शिक्षक का नैतिकीकरण आवश्यक है। अच्छी शिक्षा बालक का सर्वांगी विकास करते हुए उसे बेहतर इन्सान बनाती है। मानवीय मूल्यों की शिक्षा के लिए एक-दो

कालांश निर्धारित करना अथवा अध्यापक विशेष को इसका उत्तरदायित्व सौंप देना ही पर्याप्त नहीं है। नैतिक शिक्षा को संपूर्ण विद्यालयी गतिविधियों का अंग बनाकर विभिन्न विषयों के शिक्षण के साथ जोडना होगा। अन्य विषयों की भांति विज्ञान शिक्षण में भी विभिन्न बिन्दुओं को पढाते समय उपयुक्त स्थलों (Plug points) पर मानवीय मूल्यों को मुखरित किया जा सकता हैं।

3. Mohajer Sohayl :

'Value education trough comics and short stories'

इस शोधपत्र में शोधकर्ता ने मूल्य आधारित शिक्षा के संदर्भ में बच्चों पर नैतिक साहित्य (बालसाहित्य) का पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। जिसमें शोधकर्ता ने निर्देश किया है कि, शिक्षण प्रक्रिया मूल्य के बिना नहीं होनी चाहिए, इस का उद्देश्य बालक को समाज के लिए एक उत्तम नागरिक के साथ-साथ अमदा इन्सान देना भी है। इस संदर्भ में मूल्य आधारित बालसाहित्य से बच्चों में नकारात्मक, घृणात्मक अभिवृत्तियों को मिटाना है और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना हैं। बालसाहित्य से बच्चों में कौशल एवं अभिवृत्ति में सुधार व विकास हो सकता है, जो उसे जीवन में सही राह चूनने को मदद रूप होंगे। बालसाहित्य में समाविष्ट चावी रूप प्रश्न, संवाद और कहानी आदि द्वारा दूरदृष्टि का विकास बालक में संभाव्य है।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को अपने शोधकार्य में शोध प्रविधि के लिए भी आवश्यक दिशा निर्देश करता है जो अध्याय तीन में समाविष्ट है।